International Journal of Multidisciplinary Education and Research
www.educationjournal.in
ISSN: 2455-4588
Received: 30-05-2021, Accepted: 15-06-2021, Published: 30-06-2021
Volume 6, Issue 2, 2021, Page No. 46-48

भारतीय काव्यशास्त्र का ऐतिहासिक सर्वेक्षणः एक अध्ययन

डॉ. हेमन्त सिंह कंवर
सहायक प्रध्यापक, हिन्दी विभाग, शासकीय मुकुट धर पाण्डेय महाविद्यालय, कटघोरा, कोरबा, छत्तीसगढ, भारत

सारांश
भारतीय काव्यशास्त्रीय विद्वान आचार्य भरत को काव्यशास्त्र का आद्य आचार्य और उनके ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' को प्रथम काव्यशास्त्रीय ग्रंथ मानते हैं। शिव सिंह सरोज के अनुसार हिन्दी से प्रथम आचार्य 'पुष्य' थे, जिन्होंने अपभ्रंश भाषा में अलंकार ग्रंथ का प्रणयन किया था। किन्तु पुष्य के द्वारा सृजित काव्यशास्त्रीय ग्रंथ अनुपलब्ध हैं। हिन्दी साहित्य में काव्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। काव्य की एक विधा 'छन्दों' से जहाँ काव्य में लय, गति एवं संगीतात्मकता आती है, वहीं, 'रस' मनुष्य को सुखद–दुःखद अनुभूतियों के हिडोलों में झुलाते रहते हैं। काव्य में अलंकारों का भी अपना विशेष महत्त्व है। भारतीय काव्यशास्त्र में अलंकार के लिए तीन शब्द प्रयुक्त हुए हैं– अलंकार, लक्षण और चित्रा। इनमें सर्वमान्य और सर्व प्रचलित शब्द है अलंकार। आचार्य शुक्ल कृपाराम कृत 'हित तरंगिणि', संवत् 1588 को प्रथम काव्यशास्त्रीय ग्रंथ स्वीकार करते हैं।

मूल शब्दः काव्यशास्त्र, ऐतिहासिक, सर्वमान्य, सर्वेक्षण ..... इत्यादि।

प्रस्तावना
काव्यशास्त्र शब्द अस्तित्व में आने से पूर्व चिरकाल तक भारतीय काव्यशास्त्र अलंकारशास्त्र के नाम से भी अभिहित हुआ था। इतना तो निश्चित है कि संस्कृत में काव्य की समालोचना का प्रारम्भ अलंकारों से हुआ था। क्योंकि भारतीय काव्यशास्त्र के आरम्भिक आचार्यों ने काव्य के लिए अलंकार की अनिवार्यता का प्रतिपादन किया था। इतना ही नहीं आरम्भ में काव्य के सौंदर्य का मानक अलंकार था और काव्य विवेचक ग्रंथों के नामकरण में अलंकार पद का प्रयोग मिलता है। इस सन्दर्भ में आचार्य भामह कृत 'काव्यालंकार', उद्भट कृत 'अलंकार सार संग्रह', वामन कृत 'काव्यालंकार सूत्र' और आचार्य रुय्यक कृत 'अलंकार सर्वस्व' काव्यशास्त्रीय ग्रंथ उल्लेखनीय हैं। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि काव्यशास्त्र के आरम्भिक युग में आचार्यों के अलंकार के प्रति अतिरिक्त आग्रह के कारण काव्यशास्त्र के लिए 'अलंकारशास्त्र' का प्रयोग हुआ था।

विषयवस्तु –
भारतीय काव्यशास्त्रः ऐतिहासिक सर्वेक्षण
भारतीय काव्यशास्त्र का आरम्भ कब से हुआ, निश्चित रूप से कुछ कहना अत्यन्त कठिन है। स्थूलतः अधिकांश भारतीय काव्यशास्त्रीय विद्वान आचार्य भरत को काव्यशास्त्र का आद्य आचार्य और उनके ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' को प्रथम काव्यशास्त्रीय ग्रंथ मानते हैं। सच्चाई तो यह है कि आचार्य भरतमुनि कृत 'नाट्यशास्त्र' भी पूर्णरूप से काव्यशास्त्र का निख़ववाद प्रथम ग्रंथ नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि 'नाट्यशास्त्र' में विशेष रूप से रूपकों का निरूपण हुआ है और उन्होंने रूपकों की प्रवृत्ति के आलोक में कतिपय काव्यांगों–रस, अलंकार और गुणों का विवेचन विश्लेषण किया था। अस्तु! आचार्य भरत के पश्चात् ही काव्यांग निरूपक ग्रंथों का प्रणयन हुआ था। इस दृष्टि से निस्संदेह आचार्य भामह कृत काव्यालंकार ही प्रथम काव्यांग विवेचक ग्रंथ प्रकट होता है। अतः आचार्य भामह से ही भारतीय काव्यशास्त्र का विधिवत् श्री गणेश मानना चाहिए। इतना निश्चित है कि कोई भी अविरल परम्परा अचानक नहीं चल पड़ती है। उस परम्परा के उत्स में निश्चित ही उसके भूत में बीज वपन और अंकुरित हो चुके होते हैं। अतः साक्ष्य उपलब्ध न हों किन्तु प्रतीत होता है कि आचार्य भरत से पूर्व निश्चित ही काव्यांग निरूपण के प्रयास हो चुके होंगे। इसीलिए आचार्य राजशेखर भारतीय काव्यशास्त्र का उद्गम आचार्य भरत से पूर्व मानते हैं। आचार्य राजशेखर का मत है कि भगवान श्री कंठ शिव ने इस काव्य विधा का प्रथम उपदेश परमेष्ठी, बैकुंठ आदि चौसठ शिष्यों को दिया था। उनमें से ब्रह्मा ने अपने मानस जन्मा शिष्यों को इस विधा का उपदेश दिया। इन शिष्यों में सरस्वती का पुत्र काव्य पुरुष सर्वाधिक वन्दनीय हुआ। ब्रह्मा ने तीनों लोकों की हित कामना से प्रेरित होकर त्रिकाल और दिव्य दृष्टि वाले काव्य–पुरुष को काव्य विधा के प्रचार की आज्ञा दी। काव्य पुरुष ने 18 अधिकरणों में काव्य विधा को विभक्त करके, अपने 18 शिष्यों को पृथक्–पृथक् आचार्य राजशेखर ने जिन 18 आचार्यों और काव्य विधा के अधिकरणों का उल्लेख किया है, उनमें से कतिपय आचार्यों में सुवर्णनाभ, कुचमार, नंदिकेश्वर और भरत का नाम उल्लेख्य है।
वस्तुतः उत्तरवर्ती ग्रंथों में सुवर्णनाभ को कामसूत्र के सांप्रयोगिक और कुचमार को औषनिषदिक खंड का आचार्य माना गया है
पंचसावक' और 'रति रहस्य' में नंदिकेश्वर को काव्यशास्त्र तथा 'संगीत रत्नाकर' में संगीत का आचार्य माना गया है। इतना ही नहीं 'अभिनव भारती' की टीका में नंदिकेश्वर के मत को कीखतधर के साक्ष्य के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। शारदा तनय का मत है कि भरत को नंदिकेश्वर ने ही नाट्य शिक्षा दी थी। इस प्रकार राजशेखर ने भरत को रूपक निरूपक आचार्य माना है। भरत कृत 'नाट्यशास्त्र' काव्यशास्त्र के उद्गम विषयक राजशेखर के मत को सर्वाधिक प्रमाणित करता है। इसी प्रकार भारतीय काव्यशास्त्र के प्रारंभिक आचार्यों में भामह और दंडी ने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में पूर्ववर्ती आचार्यों का उल्लेख किया है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि निस्संदेह आचार्य भरत से पूर्व काव्यशास्त्र के ग्रंथों का प्रणयन हुआ होगा, किन्तु संप्रति वे काव्यशास्त्रीय ग्रंथ उपलब्ध नहीं हैं। वेद के अंगों में उपलब्ध काव्यशास्त्र का स्पुफट विवेचन इस बात का प्रमाण है कि आचार्य भरत से पूर्व निश्चित काव्यांग विवेचन की परम्परा चल पड़ी होगी। अतः प्रकट होता है कि काव्य रचना के साथ ही वैदिक काल में ही काव्यांग निरूपण का आरम्भ हुआ होगा और काव्यशास्त्र सम्बंधी ग्रंथ भी लिखे गए होंगे। साक्ष्यों के अभाव में मात्र ऐसा अनुमान ही प्रतीत होता है। उपलब्ध साक्ष्यों के आधार

पर आचार्य भरत कृत 'नाट्यशास्त्र' ही प्रथम काव्यशास्त्रीय ग्रंथ ठहरता है, किन्तु भारतीय काव्यशास्त्र की अविरल परम्परा आचार्य भामह से चल पड़ती है। वस्तुतः वैदिक काल से लेकर आचार्य विश्वेश्वर पाण्डेय तक की लम्बी अवधि, संस्कृत काव्यशास्त्र के विकास क्रम को डॉ. एस. के. डे ने चार भागों में विभक्त किया है –

1. प्रारम्भिक काल : अज्ञात काल से भामह तक।
2. रचनात्मक काल : भामह से आनंदवर्धन तक 650 ई. के 860 ई. तक।
3. निर्णयात्मक काल : आनंदवर्धन से मम्मट तक 850 ई. से 1050 ई. तक।
4. व्याख्या काल : मम्मट से जगन्नाथ तक 1050 ई. से 1750 ई.।

डॉ. बलदेव उपाध्याय ने ध्वनि सिद्धान्त को आधार मानकर संस्कृत काव्यशास्त्र के इतिहास को तीन श्रेणियों में बाँटा है–

1. पूर्व ध्वनि काल
2. ध्वनि काल
3. पश्चात् ध्वनि काल

प्रायः डॉ. एस. के. डे और डॉ. बलदेव उपाध्याय का कालक्रम विभाजन पर्याप्त वैज्ञानिक है। संस्कृत और हिन्दी के अधिकांश विद्वानों ने डॉ. डे और डॉ. उपाध्याय के ही काल क्रम को अपनाया है। इनके काल वर्गीकरण को आधार मानकर भारतीय काव्यशास्त्र को निम्न चरणों में विभाजित किया जा सकता है –

1. प्रथम चरणः अज्ञात से आचार्य भरत तक।
2. द्वितीय चरणः आचार्य भामह से आनंदवर्धन से पूर्व तक।
3. तृतीय चरणः आनंदवर्धन से पूर्व मम्मट तक।
4. चतुर्थ चरणः आचार्य मम्मट से विश्वेश्वर पाण्डेय तक।

प्रथम चरणः अज्ञात से आचार्य भरत तक –

भारतीय काव्यशास्त्र का आरम्भ अधिकांश विद्वान भरत कृत नाट्यशास्त्र से मानते हैं, किन्तु भारतीय वाङ्मय में अनेक स्थलों में भरत से पूर्व अनेक आचार्यों का उल्लेख हुआ है। स्वयं राजशेखर ने 'काव्य मीमांसा' में काव्य विधा अथवा काव्यशास्त्र के उद्भव की रोचक कहानी प्रस्तुत की है। राजशेखर ने ब्रह्मा के लोकप्रिय, त्रिकालदर्शी शिष्य 'काव्य विधा' अथवा 'काव्यशास्त्र' के पृथक् ग्रंथों के प्रणयन की बात कही है। तथापि अधिकांश भारतीय विद्वान राजशेखर द्वारा प्रस्तुत 'काव्य विधा' अथवा 'काव्यशास्त्र' के उद्भव की कथा को मात्रा काल्पनिक मानते हैं, किन्तु राजशेखर की काव्यशास्त्र के उद्भव की कथा को सर्वथा काल्पनिक नहीं माना जा सकता है, क्योंकि राजशेखर ने जिन अट्ठारह काव्यशास्त्र के स्नातकों का उल्लेख किया है, उनमें से सुवर्णनाभ, कुचमार, नंदिकेश्वर और भरत के सम्बन्ध में कुछ पुष्ट प्रमाण मिलते हैं। इस दृष्टि से निश्चित ही भारतीय काव्यशास्त्र का प्रारम्भ आचार्य भरत से पूर्व आरम्भ हो गया होगा, किन्तु साक्ष्यों के अभाव में मात्रा अनुमान लगाया जा सकता है। अतः कहना न होगा कि वैदिक साहित्य के प्रारम्भ के साथ काव्यशास्त्र का भी जन्म हो गया था। खेद है कि उन आचार्यों के ग्रंथ उपलब्ध नहीं हैं। फिर भी निरुक्त और व्याकरण वेदांगों में अत्यल्प मात्र में काव्यशास्त्र संबंधित विषयों का विवेचन प्राप्त होता है। निरुक्त में उपमा का लक्षण निरूपण और 12 उपमावाचक शब्दों का कथन हुआ है। इसके अतिरिक्त निरुक्त में उपमान, निदर्शन, आशी आदि शब्दों का भी प्रयोग मिलता है। इसी प्रकार आचार्य से पूर्व पाणिनी ने अष्टाध्यायी में उपमा के चारों अंगों उपमेय, उपमान, वाचक और साधारण धर्म पर प्रकाश डाला है। भारतीय काव्यशास्त्र के इतिहास के प्रथम चरण में काव्यशास्त्र विषयक उपलब्ध एक मात्रा ग्रंथ आचार्य भरतकृत 'नाट्यशास्त्र' है। इस ग्रंथ में मूलतः नाट्य तत्त्वों एवं रस का सूक्ष्म विवेचन किया गया है। इस ग्रंथ में रूपक एवं रस के अतिरिक्त 4 अलंकारों, 10 गुणों और 10 दोषों का भी निरूपण हुआ है। आलोच्य चरण में आचार्य भरत के पश्चात् मेधाविन् नाम भी उल्लेखनीय है। यद्यपि मेधाविन् का कोई भी ग्रंथ उपलब्ध नहीं है, किन्तु परवर्ती ग्रंथों में मेधाविन् के पर्याप्त काव्यशास्त्रीय उद्धहरण उपलब्ध हैं। 'अग्निपुराण' को अनेक विद्वान बहुत बाद की रचना मानते हैं, किन्तु प्राचीन परम्परा को स्वीकार करते हुए 'अग्निपुराण' को भी प्रथम चरण में रखा जा सकता है। 'अग्निपुराण' के 336–346 अध्यायों में 'काव्यशास्त्र' विषयक विषयों का विवेचन हुआ है। वस्तुतः भारतीय काव्यशास्त्र के इतिहास के प्रथम–चरण में मूलतः विशुद्ध रूप से काव्यशास्त्रीय ग्रंथ उपलब्ध नहीं हैं तथापि इतना अवश्य माना जा सकता है कि भारतीय काव्यशास्त्र के इतिहास के प्रथम चरण में काव्यशास्त्र के बीजांकुर हो चुके थे। जो कालांतर में पल्लवित एवं पुष्पित हुए। इस दृष्टि से भारतीय काव्यशास्त्र के इतिहास में प्रथम चरण का विशिष्ट ऐतिहासिक महत्त्व है।

द्वितीय चरणः भामह से आनंदवर्धन पूर्व तक

यह काल स्वर्णकाल माना जाता है। सच्चाई तो यह है कि इसी युग से विधिवत् काव्यशास्त्र की परंपरा का प्रारंभ होता है। आलोच्य काल के प्रथम आचार्य भामह हैं। इस काल के प्रमुख आचार्यों में भामह, दंडी, वामन, उद्भट, रुद्रट, लोल्लट, शंकुक और भट्टेन्दु नायक का नाम महत्त्वपूर्ण है। इस काल में मूलतः तीन काव्य सम्प्रदायों का प्रतिपादन हुआ था। वे संप्रदाय–रस, अलंकार और रीति हैं। आचार्य भामह, दंडी, उद्भट और रुद्रट अलंकार दण्डी और वामन रीति सम्प्रदाय और लोल्लट, शुंकुक और भट्टेन्दु नायक आदि रस संप्रदाय के प्रवर्त्तक और संवर्द्धक माने जाते हैं। आलोच्य चरण में सृजित काव्यशास्त्रीय ग्रंथों में आचार्य भामह कृत 'काव्यालंकार' दंडी कृत 'काव्यादर्श' उद्भट कृत 'अलंकारसार संग्रह, वामन कृत 'काव्यालंकार सूत्रावृत्ति' रुद्रट कृत 'काव्यालंकार' आदि का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वस्तुतः आलोच्य काल में प्रायः सभी काव्यशास्त्र के विषयों का विवेचन हुआ था, किन्तु इस चरण में अलंकार विवेचन सर्वाधिक हुआ है। सामान्यतः आलोच्य–चरण के सभी आचार्यों ने काव्य के लिए अलंकारों की अनिवार्यता का प्रतिपादन किया था। आलोच्य चरण में अलंकारों के प्रति अतिरिक्त आग्रह के कारण ही काव्यशास्त्रीय ग्रंथों के लिए 'अलंकारशास्त्र' का प्रचलन भी हुआ। कुल मिलाकर आलोच्य चरण को 'रचनाकाल' और इस चरण के आचार्यों को आलंकारिक आचार्य कहा जाता है।

तृतीय चरणः आनंदवर्धन से मम्मट पूर्व

इस चरण को डॉ. डे ने निर्णयात्मक काल और डॉ. बलदेव उपाध्याय ने ध्वनिकाल के नाम से अभिहित किया है। आलोच्य चरण के प्रमुख आचार्यों में आनंदवर्धन, अभिनव गुप्त, कुंतक, महिम भट्टेन्दु, रुद्र भट्टेन्दु, धनंजय और भोजराज का नाम सादर उल्लेखनीय है। आलोच्य चरण में ध्वनि और वक्रोक्ति सम्प्रदाय का प्रचलन हुआ। अतः काव्यशास्त्र के विकास की दृष्टि से आलोच्य चरण का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस चरण में आनंदवर्धन कृत 'ध्वन्यालोक' द्वारा ध्वनि संप्रदाय की प्रतिष्ठा हुई। भारतीय काव्यशास्त्र में ध्वनि सम्प्रदाय की प्रतिष्ठा महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना थी क्योंकि ध्वनि सम्प्रदाय की प्रतिष्ठा के पश्चात् भारतीय काव्यशास्त्र के इतिहास में आमूल परिवर्तन हुए। काव्य के लिए अलंकारों की अनिवार्यता की धारणा जाती रही क्योंकि आनंदवर्धन ने ध्वनि को काव्य की आत्मा का पद प्रदान करके, रस, गुण, अलंकार और रीति को ध्वनि के गुणों के उत्कर्षक माना। तब से गुण, अलंकार, रीति काव्य के ब्राह्य उपकरण मात्र रह गए। यद्यपि भट्टेन्दु, नायक, कुंतक तथा महिम भट्टेन्दु ने अपने मतों से ध्वनि मत का खंडन करने का प्रयत्न किया, किन्तु परवर्ती आचार्यों में

अभिनव गुप्त और मम्मट के पूर्ण समर्थन से ध्वनि संप्रदाय पुष्ट हुआ। कालांतर में काव्यशास्त्र के इतिहास में ध्वनि संप्रदाय अत्यंत लोकप्रिय हुआ। इस चरण में आनंदवर्धन के बाद तक ने 'वक्रोक्ति जीवित' ग्रंथ की रचना की थी और वक्रोक्ति का प्रचलन हुआ। कुल मिलाकर आलोच्य चरण का भारतीय काव्यशास्त्र के इतिहास में विशेष महत्त्व है।

चतुर्थ चरण : मम्मट से विश्वेश्वर पांडेय तक

इस चरण को 'व्याख्याकाल' भी कहा जाता है। इस काल के प्रमुख आचार्यों में मम्मट कृत 'काव्य प्रकाश' रुप्यक कृत' 'अलंकार सर्वस्व', हेमचंद्र कृत 'काव्यानुशासन', रामचंद्र तथा गुणचंद्र कृत 'नाट्य दर्पण', वाग्भट प्रथम कृत, 'वाग्भटालंकार', वाग्भट, द्वितीय कृत 'काव्यानुशासन', जयदेव कृत 'चंद्रालोक', विद्याधर कृत 'एकावली', विद्यानाथ कृत 'प्रतापरुद्र, यथोभूषण', विश्वनाथ कृत 'साहित्य दर्पण', केशवमिश्र कृत 'अलंकार शेखर', शारदा तनय कृत 'भाव प्रकाशन', भानुदत्त कृत 'रस मंजरी', रूप गोस्वामी कृत 'नाटक चंद्रिका', कवि कर्ण कपूर कृत 'अलंकार कौस्तुभ', अप्पय दीक्षित कृत 'कुवलयानंद', पंडितराज जगन्नाथ कृत 'रस गंगाधर', आशाधर भट्टड्ड कृत 'अलंकार दीपिका' और विश्वेश्वर पांडेय कृत 'अलंकार कौस्तुभ', 'अलंकार मुक्तावली', 'रस चंद्रिका', 'अलंकार प्रदीप' और 'कवींद्र कंठाभरण' उल्लेखनीय हैं। इस चरण में काव्यशास्त्रीय ग्रंथों का प्रणयन विविध पद्धतियों से हुआ। आचार्य मम्मट, हेमचंद्र, विश्वनाथ, जयदेव और पंडितराज जगन्नाथ ने समस्त काव्यांग निरूपक ग्रंथों की रचना की थी। कतिपय आचार्यों ने अलंकार और रस विषय ग्रंथों का सृजन किया था। इन आचार्यों में रुप्यक, अप्पय दीक्षित और विश्वेश्वर पांडेय ने अलंकार सिद्धांत, शारदातनय, शिंगभूपाल रूप गोस्वामी तथा भानुदत्त ने रस सिद्धांत विषय पर आधारित ग्रंथों का प्रणयन किया था। इसी चरण में आचार्य क्षेमेंद्र ने औचित्य सिद्धांत को प्रतिष्ठित किया। वस्तुतः आलोच्य चरण में काव्यशास्त्र के विविध सिद्धांतों तथा विविध काव्यांगों को स्थिरता मिली थी और इनके मानक स्थिर हुए। इस दृष्टि से आलोच्य चरण का भी भारतीय काव्यशास्त्र के इतिहास में विशेष महत्त्व है।

उपसंहार

भारतीय काव्यशास्त्रीय विद्वान आचार्य भरत को काव्यशास्त्र का आद्य आचार्य और उनके ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' को प्रथम काव्यशास्त्रीय ग्रंथ मानते हैं। भारतीय काव्यशास्त्र के इतिहास के प्रथम चरण में काव्यशास्त्र विषयक उपलब्ध एक मात्र ग्रंथ आचार्य भरतकृत 'नाट्यशास्त्र' है। काव्य के लिए अलंकारों की अनिवार्यता की धारणा जाती रही क्योंकि आनंदवर्धन ने ध्वनि को काव्य की आत्मा का पद प्रदान करके, रस, गुण, अलंकार और रीति को ध्वनि के गुणों के उत्कर्षक माना। शिव सिहं सरोज के अनुसार हिन्दी के प्रथम आचार्य 'पुष्य' थे, जिन्होंने अपभ्रंश भाषा में अलंकार ग्रंथ का प्रणयन किया था। हिन्दी काव्यशास्त्र के इतिहास में सन् 1900 ई. के पश्चात् अधिकांश काव्यशास्त्रीय ग्रंथों का प्रणयन खड़ी बोली गद्य में हुआ है। हिन्दी काव्यशास्त्र के गद्यकाल में साहित्यकारों के द्वारा अपनी रचनाओं में भी काव्यशास्त्र विषय का प्रासांगिक और विवेचन एवं विश्लेषण किया गया है।

सन्दर्भ सूची

1. भारतीय काव्यशास्त्र – सत्येन्द्र चौधरी।
2. पाश्चात्य समालोचन के सिद्धान्त – डॉ. एस. पी. खत्री।
3. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र – सत्यदेव चौधरी एवं शान्तिस्वरूप गुप्त।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल।
5. साहित्य इतिहास एवं संस्कृति – शिव कुमार मिश्र।
6. हिन्दी आलोचना की परम्परा – कालूराम परिहार।